व्यवसाययोजना

हथकरघा

(शॉल , स्टॉल व मफ़लर बुनाई)

नाग रानी स्वयं सहायता समूह (न्यूल उप समिति)

जैवविविधता प्रबंधन कमेटी	न्यूल
उप-समिति	न्यूल
ग्राम पंचायत	न्यूल
फील्ड तकनीकी इकाई /वन परिक्षेत्र	वन्यप्राणी परिक्षेत्र,कुल्लू
मंडलीय प्रबंधन इकाई /वनमंडल	वन्य प्राणी मंडल कुल्लू
वन वृत्त समन्वय इकाई/वनवृत्त	GHNP Circle , शमशी

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधर परियोजना
(जाईका वित्तपोषित)

विषय –सूची

क्र0सं0	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	परिचय	3
2	कार्यकारिणी सारांश	3-5
3	स्वयं सहायता समूह/समान रूची समूह का विवरण व सूची	5-6
4	गांव की भौगोलिक स्थिति का विवरण	6
5	आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित उत्पाद का विवरण	7
6	उत्पादन की प्रक्रियाऐं	7-8
7	उत्पादन नियोजन	8-9
8	कच्चे माल की आवश्यकता एवं अनुमानित उत्पादन	9
9	विक्रय तथा विपणन	9-10
10	सदस्यों के मध्य प्रबन्धन का विवरण	10
11	शक्ति, दुर्बलता, अवसर तथा चुनौती का विश्लेषण (SWOT Analysis)	10-11
12	सम्भावित जोखिम व उनको कम करने के उपाय	11
13	व्यवसाय योजना की अर्थव्यवस्था का विवरण	12-13
14	अर्थव्यवस्था का सारांश	13
15	अनुमान	13
16	उद्यम हेतूलाभ– लागत विश्लेषण	14
17	धन की आवश्यकता/धन की आवश्यकता का नियोजन	15
18	सम छेदन बिंदु	15
19	ऋण वापिस का किश्तवार नियोजन	15-16
20	समूह के नियम	16
21	समूह की सहमति तथा प्रधान, जैव विविधता उपसमिति न्यूल का अनुमोदन / स्वीकृति	17
22	स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के फोटो	18

1. परिचय

हथकरघा उद्योग प्राचीनकाल से ही हाथ के कारीगरों की आजीविका प्रदान करता आया है। भारत में हथकरघा ऊद्योग समय के साथ सबसे महत्वपूर्ण कुटीर व्यापार के रूप में उभरा है। हथकरघा बुनकर कपास, रेशम और ऊन के शुद्ध रेशों का उपयोग कर उत्पाद तैयार करते रहे हैं। हैंडलूम उद्योग भारत की सांस्कृतिक विरासत का आवश्यक अंग है। पहले कुल्ल्वी लोग सादे शॉल बुनते थे लेकिन हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के रामपुर से बुशहरी शिल्पकार के आने के बाद पैटर्न वाले हथकरघा का चलन अस्तित्व में आया। बहुत समय पहले तक पुरुष और महिलाएं अपने घरों में पारंपरिक खड्डियों (Pitlooms) में बुनाई का काम करते थे और सार्दियों के लिए परिवार के लिए गर्म कपड़ों की स्वयं व्यवस्था करते थे। उसके बाद हथकरघा का चलन शुरू हुआ, यह संभवत: ब्रिटिश काल में उनके प्रभाव के कारण हुआ। कुल्लू की पारंपरिक बुनाई उत्पादों में दोड़ू, पट्टू, पट्टी (Tweed), शाल, टोपी के बार्डर व मफलर आदि आते हैं। सत्तर के दशक के पश्चात् पर्यटकों के बढ़ते आगमन व उसमे लगातार होती वृद्धि व पर्यटकों के कुल्लू हस्तशिल्प उत्पादों में रूचि इस कार्य में लगे लोगों खासकर महिलाओं के लिए, जो इस क्षेत्र में बुनकरों का लगभग 70% हैं, की आजीविका का साधन बनता गया। मैदानी क्षेत्रों में बने पावरलूम उत्पादों से इस क्षेत्र में विभिन्न कार्य कर रहे शिल्पियों और व्यवसाइयों को अपने उत्पादों के विपणन में कठिनायाँ आ रही है। भारत सरकार तथा राज्य सरकार समय समय पर इस क्षेत्र को प्रोत्साहन देने में प्रयासरत है। अभी हाल ही में भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय की ओर से राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर नग्गर के शरण गांव को हैंडलूम क्रॉफ्ट विलेज में शामिल किया गया है। इस गांव में मूलभूत सुविधाओं के सृजन तथा सौंदर्यीकरण पर लगभग 1.40 करोड़ रुपये की राशि खर्च की जाएगी। गांव में भव्य हैंडलूम सुविधा केंद्र का निर्माण किया जाएगा। इसमें तैयार किए गए उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा।

हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा संचालित तथा जाइका वित्तपोषित " हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना" (PIHPFEM&L) के माध्यम से पारिस्थितिकी तन्त्र प्रबंधन के साथ साथ वनों के पास रहने वाले समुदायों की आजीविका में सुधार के प्रयास किये जा रहे हैं। महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन कर के उनकी रूचि के अनुसार गतिविधियों को चुन कर इन समूहों की सहायता की जा रही है। इस प्रकार की गतिविधियों में एक गतिविधि हथकरघा, जो कुल्लू का पारंपरिक शिल्प है, में नागरानी स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने काम करने की इच्छा जताई है। न्यूल जैवविविधता प्रबंधन कमेटी की "न्यूल" उप समिति के "नाग रानी " स्वयं सहायता समूह ने हथकरघा की गतिबिधि का चयन किया है जिसके हर पहलू को ध्यान में रख कर इस व्यवसाय योजना को बनाया गया है।

2 कार्यकारिणी सारांश

हिमाचल प्रदेश के पश्चिम हिमालय में स्थित है। यह राज्य कुदरती सुंदरता और समृद्ध सांस्कृतिक व धार्मिक धरोहर से भरपूर है। राज्य में विविध पारितंत्र, नदियाँ व घाटियाँ पाई जाती है। इसकी आबादी 70 लाख के करीब है। इसका भौगोलिक क्षेत्र 55673 वर्ग कि० मी० है। हिमाचल प्रदेश में शिवालिक पहाडियों से लेकर मध्य हिमालय का क्षेत्र के ऊँचाई व और ठंडे जोन का क्षेत्र पाया जाता है। राज्य के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। हिमाचल प्रदेश के 12 जिलों में से 6 जिले में हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन और आजीविका सुधार परियोजना जाईका (JICA) के सहयोग से चलाई जा रही है। जिसमे कुल्लू ज़िला भी शामिल है।

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (जाईका वित्तपोषित) प्रारंभ होने पर जैवविविधता प्रबंधन कमेटी न्यूल की "न्यूल" उप समिति की सूक्षम योजना बनाई गयी है। वन विकास समिति के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि व बागवानी है परन्तु प्रत्येक परिवार की औसत भूमि चार-पांच बीघा से कम है इसके इलावा सिंचाई के कोई भी साधन नहीं है। अत: अधिकतर लोग जिले के अंदर व जिले के बाहर मजदूरी कमाने जाते हैं तथा सिचांई की उचित व्यवसाय ना होने के कारण लोगों को उनके आय में आपेक्षित बढोतरी नहीं हो पा रही है। यहाँ के लोग मुख्यत: गेहूं, मक्की, जौ व दालों की खेती करने के साथ सेब, प्लम, नाशपति व खुमानी इत्यादि बागवानी फसले उगाते हैं। आय के वैकल्पिक साधन ना होने के कारण मजदूरी के लिए घर से वाहर जाना पड़ता है। इस समस्या उबरने के लिए स्वयं सहायता समूह नाग रानी ने शॉल, स्टॉल और मफलर इत्यादि का कार्य करके अपनी आजीविका बढाने का निर्णय लिया है। आजीविका सुधार योजना गतिविधि के लिए स्थानीय स्वयं सहायता समूह बनाये गए हैं इन में से नाग रानी स्वयं सहायता समूह का 12 मार्च, 2020 को गठन किया गया है। इस समूह में कुल 15 महिला सदस्य है । ये सभी महिलाएं अनुसूचित जाति से सम्बन्ध रखती हैं। इस समान रुची समूह ने विस्तार से चर्चा करने पर शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने व विपणन करने का निर्णय किया है। बाज़ार की मांग के अनुसार इन वस्तुओं के बनाने की संख्या निर्धारित होगी तथा बॉर्डर बनाने का काम भी जोड़ सकती हैं।

इस समूह में कुछेक सदस्य शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर बुनाई का कार्य पहले से ही कर रही है । उनके अनुभव का लाभ समूह के अन्य सदस्यों को भी होगा। उत्पादन के बाद प्रारंभ में विपणन करने के लिए स्थानीय दुकानदारों या थोक विक्रेताओं के साथ समूह को जोड़ा जाएगा। दक्षता व उत्पादन में वृद्धि के साथ साथ विपणन की संभावनाओं को और अधिक स्तर में खोजने की और इसमें विस्तार की आवश्यकता होगी । अभी हाल ही में मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश ने हथकरघा दिवस पर बताया था कि प्रदेश सरकार हिमाचल के हथकरघा उत्पादों की विक्री फ्लिपकार्ट के माध्यम से करने हेतु वार्ता कर रही है । उम्मीद है कि इस प्रकार के प्रयासों से स्वयं सहायता समूहों की आजीविका के साधनों में निरंतर सुधारा हो सकेगा । समूह के सदस्य सामूहिक तौर पर ज्यादा मांग में उत्पादन करके अपनी आजीविका बढा सकती है। इस समूह की सभी महिलाएं अनुसूचित जाति से सम्बन्ध रखती हैं अतः पूंजीगत लागत का 75% भाग परियोजना द्वारा वहन किया जाएगा। खड्डीयों को स्थान पर पहुँचाने व स्थापित करने में भी परियोजना आर्थिक सहायता देगी। समूह ने तय किया है कि परियोजना की सहायता से 75% तथा 25% पूंजीगत व्यय को नकदी कैश के रूप इकट्ठा करके देंगे। समूह के सदस्य बैंक से ऋण नहीं लेना चाहते है अत: प्रथम चक्र में 50% उत्पादन करेंगे तथा इससे कमाए गए लाभांश व मजदूरी से दुसरे चक्र के लिए आवर्ती व्यय करेंगे। शेष लाभांश को आपस में बटवारा करेंगे। अगले चक्र के बाद सभी सदस्य समान रूप से लाभांश व मजदूरी को आपसी सहमती से बंटवारा करेंगे।

शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने के लिए कच्चा माल व खड्डीयां स्थानीय स्तर पर उपलब्ध है तथा विपणन की भी स्थानीय स्तर पर अपार सम्भावना है क्योंकि कुल्लू घाटी में लगभग पूरी साल पर्यटकों का आना जाना रहता है। कुल्लू के शॉल, स्टॉल, बॉर्डर, टोपी और मफलर आदि की सुदरता भारतवर्ष में विख्यात है अत: पर्यटक घर लोटते समय अपने परिवार व मित्रों के लिए उपहार हेतु प्रचुर मात्रा में खरीददारी करते है। समूह के सदस्यों को परियोजना शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा पूंजीगत व्यय के 75% के बराबर सहायता राशी भी परियोजना देगी। क्योंकि समूह में सभी महिलाएं अनुसूचित जाति से सम्बन्ध रखती हैं तो वह समूह परियोजना से पूंजीगत व्यय का 75% सहायता प्राप्त कर सकती है । इसके अतिरिक्त 1,00,000/- परिक्रामी निधि (Revolving Fund) दिया जाएगा। समूह ने तय किया है कि सभी सदस्य नियम व शर्तो के हिसाब से तथा आपसी सहमति से कार्यो व इस गतिविधि से होने वाले लाभों का आपसी बंटवारा करेंगे।

यह व्यवसाय योजना बनाने के लिए श्री जूगत राम उत्पादन तकनीकी सहायक रिटायर्ड (हिम बुनकर) से हर पहलु पर चर्चा की गयी। श्री जूगत राम से विस्तार से चर्चा करने के बाद उनकी सलाह के अनुसार व्यवसाय योजना बनाई गयी है। व्यवसाय योजना बनाते समय विशेषज्ञ ने समूह के सदस्य की सख्यां शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने की क्षमता तथा कच्चे माल की उपलब्धता मांग व विपणन को ध्यान में रखकर 56 शॉल, 100 स्टॉल और 135 मफलर प्रतिमाह तैयार करने की व्यवसाय योजना बनाई है। समूह औसतन वर्षभर 4 से पांच घंटे प्रतिदिन का समय निकालकर उपरोक्त उत्पादों का उत्पादन करेगा। मार्च के मध्य से नवम्बर तक खेती बाड़ी के कार्यो से कम समय मिलेगा परन्तु शेष महीनों में इस गतिविधि के कार्यो के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध होगा। इस सबंध में श्री जूगत राम द्वारा या अन्य सक्षम व्यक्ति अथवा संसथान द्वारा मोके पर शाल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर का प्रशिक्षण मोके पर जा कर प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा शुरू में क्वालिटी कण्ट्रोल, डिज़ाइन बनाने व विपणन में भी इनकी सेवाएँ लेना प्रस्तावित है।

3 स्वयं सहायता समूह/समान रूची समूह का विवरण

3.1	स्वयं सहायता समूह का नाम	नाग रानी
3.2	जैवविविधता प्रबंधन कमेटी	न्यूल
3.3	उपसमिति का नाम	न्यूल
3.4	वन परिक्षेत्र	वन्यप्राणी, कुल्लू
3.5	वन मण्डल	वन्यप्राणी, कुल्लू
3.6	गांव	न्यूल
3.7	विकास खण्ड	कुल्लू
3.8	जिला	कुल्लू
3.9	समूह के कुल सदस्यों की संख्या	15 महिलाएं
3.10	समूह के गठन की तिथि	12.03.2020
3.11	समान रूचि समूह की मासिक बचत	100/-
3.12	बैंक का नाम और शाखा जंहा समूह का खाता संचाालित	कांगड़ा सेंट्रल को-ओपेरेटिब बैंक, बजोरा
3.13	बैंक खाता संख्या	50073092177
3.14	समूह की कुल बचत	14000/-
3.15	समूह द्वारा सदस्यों को दिया गया ऋण	अभी तक नही
3.16	कैश क्रैडिट सीमा समूह सदस्यों द्वारा वापस किया गया ऋण की स्थिति	अभी नहीं किया

समूह में सम्मिलित सदस्यों का ब्यौरा निम्न प्रकार से है :

कमांक	लाभार्थी का नाम व पता सुश्री/श्रीमती	पिता/ पति का नाम श्री	पद	गांव	आयु	लिंग	श्रेणी	सम्पर्क
1	ममता कुमारी	मान चन्द	प्रधान	कालिजान	35	स्त्री	अनु० जाति	9805293821

2	भावना	भिवनेश्वर सिंह	उपप्रधान	कालिजान	23	स्त्री	अनु0 जाति	8988952436
3	पार्वती देवी	करम चन्द	कोषाध्यक्ष	कालिजान	46	स्त्री	अनु0 जाति	7876885481
4	सोहली देवी	प्रेम चन्द	सचिव	तरिगड़	46	स्त्री	अनु0 जाति	9459677543
5	जय माला	तीखू राम	सदस्य	कालिजान	34	स्त्री	अनु0 जाति	9805506412
6	ठाकरी देवी	शिव चन्द	सदस्य	कालिजान	51	स्त्री	अनु0 जाति	9459903951
7	भक्ति देवी	योगराज	सदस्य	कालिजान	28	स्त्री	अनु0 जाति	8894323339
8	मथरु देवी	नूप राम	सदस्य	कालिजान	35	स्त्री	अनु0 जाति	9817377739
9	इंद्रा देवी	आत्मा राम	सदस्य	कालिजान	47	स्त्री	अनु0 जाति	7876051553
10	रजनी देवी	हरनाम सिंह	सदस्य	कालिजान	33	स्त्री	अनु0 जाति	7876874401
11	हेत मणी	चीनू राम	सदस्य	कालिजान	41	स्त्री	अनु0 जाति	7876696604
12	शांता देवी	केशव राम	सदस्य	तरिगड़	41	स्त्री	अनु0 जाति	8988895220
13	मथरा देवी	नरेश कुमार	सदस्य	कालिजान	28	स्त्री	अनु0 जाति	7018200691
14	अनीता देवी	दीनू राम	सदस्य	कालिजान	29	स्त्री	अनु0 जाति	7876394276
15	डमेश्वरी देवी	सुरेश कुमार	सदस्य	कालिजान	19	स्त्री	अनु0 जाति	7650934631

4. गांव की भौगोलिक स्थिति

4.1	जिला मुख्यालय से दूरी	24 km.
4.2	मुख्य सड़क से दूरी	सम्पर्क मार्ग पर
4.3	स्थानीय बाजार का नाम और दूरी	कुल्लू 24 km., भुन्तर 14 km.
4.4	मुख्य बाजार से दूरी और नाम	कुल्लू 24 km.
4.5	अन्य प्रमुख शहरों और कसबों से दूरी	मनाली 66 km. भुन्तर 14 km.
4.6	बाजार/बाजारों से दूरी जहां पर उत्पादन की बिक्री की जायेगी	कुल्लू 24 km. मनाली 66 km. भुन्तर 14 km.
4.7	ग्राम के सम्बन्ध में अन्य कोई विशिष्ठता जो समूह द्वारा चयनित आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित हो	कुछेक सदस्य पहले से हथकरघा बुनाई से अवगत हैं

5. आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित उत्पाद का विवरण

5.1	उत्पाद का नाम	शॉल, स्टॉल और मफलर
5.2	उत्पाद की पहचान की पद्वति	समूह का कुछ सदस्य अपने स्तर पर पहले से ही शाल, स्टाल व बॉर्डर बुनाई का कार्य करती है व उत्पादित समान को स्थानीय बाजार में भारी मांग है। समूह में उत्पादन व विपणन करने पर अतिरिक्त आय की आपार सभावना है।
5.3	समान रूचि समूह के सदस्यों की सहमति	हां (सहमति पत्र सलंग्न है।)

6. उत्पादन की प्रक्रियाओं का विवरण

सर्व प्रथम समान रूची समूह के सदस्यों को परियोजना द्वारा शॉल, स्टॉल और मफलर आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया जाऐगा। प्रशिक्षण के उपरान्त समूह के सदस्यों द्वारा उत्पाद तैयार करने में निम्न प्रक्रिया की जाऐगीः–

1- शाल, स्टॉल, का ताना व वाना, वार्पिग मशीन के द्वारा खरीद के स्थान पर ही विक्रेता द्वारा लगवाऐगें। इससे समय और उत्पादों की मज़दूरी दर का खर्चा कम होगा।
2- समूह में सभी सदस्य आपस में कार्य का बटवारा करके शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने का कार्य करेगें। कार्य में दक्षता प्राप्त करने पर व मांग अनुसार बॉर्डर की बुनाई को भी बाद में अपना सकते हैं।
3- सदस्य बारी–बारी विपणन करेगें व कच्चा माल भी लाऐंगे।
4- समूह के सदस्य प्रति दिन 4 से 5 घण्टे कार्य करेगें।
5- प्रत्येक सदस्य द्वारा समूह के कार्यों पर लगाये समय का ब्योरा रखा जायेगा I

प्रशिक्षण के उपरान्त समूह द्वारा निम्नलिखित उत्पादों का कार्य किया जाऐगा। जिसका विवरण इस प्रकार से है :

1. <u>शॉल</u>

कुल्लू शाल अपने ज्यामितीय पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है। विशिष्ट कुल्लू शॉल के दोनों सिरों पर ज्यामितीय डिजाइन होते हैं। ज्यामितीय डिजाइनों के अलावा, शॉल फूलों के डिजाइनों में बुने जाते हैं, जो केवल कोनों पर या सीमाओं पर ही होते हैं। प्रत्येक डिज़ाइन में एक से 8 रंग हो सकते हैं। परंपरागत रूप से, चमकीले रंग, जैसे लाल, पीले, मैजेंटा गुलाबी, हरे, नारंगी, नीले, काले और सफेद रंग का इस्तेमाल पैटर्निंग के लिए किया गया था और सफेद, काले और प्राकृतिक भूरे रंग को इन शॉलों में आधार के रूप में इस्तेमाल किया जाता था । लेकिन वर्तमान समय में ग्राहकों की मांग को ध्यान में रखते हुए इन चमकीले रंगों को धीरे–धीरे पेस्टल रंगों से बदला जा रहा है। विभिन्न रंगों में रंगे मिल स्पून यार्न का उपयोग जमीन के लिए किया जाता है, जबकि सीमा में पैटर्न के लिए ऐक्रेलिक रंगों की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग किया जाता है। ये शॉल भेड़ की ऊन, अंगोरा, पश्मीना, याक ऊन और हाथ से बनी सामग्री में उपलब्ध हैं। शॉल की कीमत ऊन की गुणवत्ता और उसमें इस्तेमाल किए गए पैटर्न की संख्या और चौड़ाई पर निर्भर करती है। इनमे लगने वाले धागों की किसम , रंग, डिज़ाइन आदि का चयन बाज़ार की मांग पर निर्भर करेगा । विभिन्न डिजाईनों की शॉले 7 सदस्यों द्वारा तैयार की जाएगी। अनुमान है कि प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घण्टें कार्य करने पर 2 दिन में 1 शॉल तैयार की जाएगी। सात सदस्य एक महीने में 56 शॉल बना सकते हैं।

2. स्टॉल

स्टॉल एक महिला शॉल है, जिसका उपयोग परिष्कृत और फैशन के प्रति जागरूक महिलाएं करती हैं। इसे शॉल की तरह शरीर के चारों ओर लपेटा जा सकता है या कंधों से लटकाया जा सकता है।

एक स्टोल आमतौर पर शॉल की तुलना में लम्बाई व चौड़ाई में छोटा होता है। विभिन्न डिजाईनों की स्टॉल 5 सदस्यों द्वारा तैयार किया जायेगा I प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घण्टें कार्य करने पर 1 दिन में 1 स्टॉल तैयार की जाएगी। इस प्रकार दो सदस्य एक दिन में दो और एक महीने में 100 स्टॉल तैयार कर सकते हैं I

3. बार्डर (बुलन/कैशमीलॉन)

कुल्लू शॉल की एक विशिष्ट विशेषता पार्श्व सिरों पर क्षैतिज रूप से चौड़ाई में चलने वाली धारियाँ या बैंड हैं। ये बैंड, कुछ सेंटीमीटर चौड़े पीले, हरे, सफेद या लाल जैसे शानदार रंगों में बुने हुए पैटर्न की विविधता से सजाए जाते हैं। इससे थोड़े भिन्न आकर के बार्डर का प्रयोग विशिष्ट कुल्वी टोपियों में विभिन्न आकर्षक डिजायनों में होता है जो इसे अलग पहचान देते हैं। 16" का बार्डर रंग बिरंगे डिजाइनों में खड्डी में बुने जाते हैं जिनकी सिलाई टोपियों में की जाति है। इस कार्य में समय अधिक लगता है और वचत कम है। अतः इस काम को करने के बारे शेष तीन कार्यों में दक्षता पाने के पश्चात् व बाज़ार की मांग के अनुसार कुछ समय बाद समूह द्वारा विचार किया जाएगा।

4. मफलर

विभिन्न अवसरों पर विशिष्ट लोगों को सम्मानित करते समय टोपी और मफलर भेंट करना पहाड़ों की परंपरा में सम्मिलित है। मफलर सादे और किनारों पर फूल/ डिजाइनों वाले बनते हैं। विभिन्न डिजाईनों के मफलर 3 सदस्यों द्वारा तैयार किये जाएँगे। प्रत्येक सदस्य प्रति दिन 4 से 5 घंटे कार्य करने पर 2 दिन में 3 मफलर तैयार कर सकती है। एक सदस्य महीने में 45 और तीन सदस्य एक महीने में 135 मफ्लर बनायेंगी।

7. उत्पादन हेतु नियोजन का विवरण

7.1	उत्पादन चक्र (दिनों में) 30 दिन प्रतिदिन 4–5 घंटे कार्य करेगें	56 शॉल 100 स्टॉल 135 मफलर
7.2	प्रति चक्र कार्यकताओं की आवश्यकता (संख्या)	7 सदस्य शॉल के लिए 5सदस्य स्टॉल के लिए 3 सदस्य मफलर के लिए **कुल 15 सदस्य**
7.3	कच्चे माल का स्त्रोत	कुल्लू, भुन्तर
7.4	अन्य संसाधनों का स्त्रोत	कुल्लू ,शमशी, भुन्तर

- *प्रत्येक उत्पादन की मात्रा का अनुमान सांकेतिक है जिनका उत्पादन बाज़ार की मांग के अनुसार कम या अधिक करना होगा I*

8	कच्चे माल की आवश्यकता एवं अनुमानित उत्पादन					
क्र०सं0	नाम	इकाई	मात्रा	दर	राशी	आपेक्षित उत्पादन
1	**शॉल (80:20 धागा)**					

क	ताना बाना	kg.	21	800	16800	56 शॉल
ख	केश्मीलोंन	kg.	1.7	500	850	
ग	वार्पिंग मजदूरी		56	25	1400	
घ	मजदूरी	दिहाड़ी	105	275	28875	
ड	पेकिंग,धुलाई अदि		56	25	1400	
	योग				**49325**	
2	**स्टॉल (80:20 धागा)**					
क	ताना बाना	kg.	36	800	28800	100 स्टॉल
ख	केश्मीलोंन	kg.	3	500	1500	
ग	मजदूरी	दिहाड़ी	75	275	20625	
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		100	20	2000	
	योग				**52925**	
3	**मफलर ऊनी**					
क	ताना बाना	kg.	13.5	1500	20250	135 मफलर
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	45	275	12375	
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		135	15	2025	
	योग				**34650**	

9 विपणन / बिक्री का विवरण

9.1	सम्भावित बाजारों / स्थलों के नाम	**कुल्लू, भुन्तर, मनाली**
9.2	उत्पाद की बिक्री हेतू गांव से दूरी	कुल्लू 14 कि0मी0 मनाली 56 कि0मी0 भुन्तर 14 कि0मी0
9.3	बाजार में उत्पाद की अनुमानित मांग	उत्पादन से अधिक मांग है।
9.4	बाजार को चिन्हित करने की प्रक्रिया	खुदरा दुकाने में पर्यटकों के द्वारा बड़े पेमाने पर खरीदारी की जाती है तथा स्थानीय निवासियों द्वारा शादी व अन्य समारोहों पर खरीदारी की जाती है।
9.5	मौसम में परिवर्तन के अनुसार उत्पाद की मांग की स्थिति	सर्दी में उत्पादों की मांग बढ जाती है। गर्मियों में पर्यटक द्वारा खरीदारी करने पर सामान्य रहती है।
9.6	उत्पाद के संभावित खरीदार	पर्यटक व स्थानीय निवासी
9.7	क्षेत्र में संभावित उपभोक्ता	कुल्लू, लाहौल व मण्ड़ी जिला के निवासी
9.8	उत्पाद का विपणन तंत्र	समान रुची समूह को कुल्लू, मनाली और भुंतर के खुदरा दुकानदारों के साथ विपणन के लिए जोड़ा जाएगा तथा मेलों में प्रदर्शनी / स्टॉल लगा कर विपणन किया जाएगा।
9.9	उत्पाद के विपणन हेतु रणनीति	स्थानीय बाज़ार में मांग कम होने पर उत्पादन को मंडी, शिमला के खुदरा दुकानदारों से जोड़ा जाएगा। मांग बढने

		या कम होने पर उत्पादन को मांग के अनुसार बढाया या कम किया जाएगा
9.10	उत्पाद का ब्राण्ड नाम	"नाग रानी "
9.11	उत्पाद का ''नारा''	आओ बुनें

10 समूह सदस्यों के मध्य प्रबंधन का विवरण

- प्रबन्धन के लिए नियम बनाये जाएगें।
- समूह के सदस्य आपसी सहमति से कार्यो का बंटवारा करेंगें।
- बंटवारा कार्य की कुशलता व क्षमता के आधार पर किया जाएगा।
- लाभ का बंटवारा भी कार्य की गुणवता व कुशलता तथा मेहनत के आधार पर किया जाएगा।
- विपणन में अनुभव रखने वाले सदस्य बारी–बारी से विपणन करेगे।
- प्रधान व सचिव प्रबन्धन का मुल्यांकन एवं अवलोकन समस–समय पर करते रहेगें।
- प्रारम्भ में प्रथम चक्र में 50%उत्पादन व आवर्ती व्यय करेंगे तथा दुसरे चक्र के लिए प्रथम चक्र की मजदूरी व लाभांश से आवर्ती व्यय करेंगे । इस व्यय के बाद ही शेष लाभांश का आपस में बंटवारा करेंगे । आगामी चक्रों में समान रूप से लाभांश व मजदूरी का बंटवारा करेंगे ।

11. शक्ति, दुर्बलता, अवसर तथा चुनौती का विश्लेषण (SWOT Analysis)

शक्ति

1. सभी समूह सदस्य सामान व् अनुकूल सोच रखते है।
2. समूह के कुछ सदस्य छोटे पैमाने उत्पाद बनाने व विपणन का कार्य पहले से कर रही है। जिस से समूह के अन्य सदस्यों को बुनाई व विपणन में असानी होगी।
3. उत्पादन लागत कम है तथा उत्पादन मांग अधिक है।
4. सदस्यों को घर के समीप ही उपलब्ध समय में आय वृद्धि का साधन मिलेगा I

दुर्बलता : -

1. स्वयं सहायता समूह नया है।
2. समूह में कार्य करने का अनुभव नहीं है।
3. सदस्यों की आर्थिक स्थिति कमज़ोर है I

अवसर : -

1. समूह में कार्य करने पर बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सकता है।
2. स्थानीय बाज़ारों में शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर इत्यादि की पर्यटन क्षेत्र होने के कारण मांग अधिक है।
3. परियोजना द्वारा खड्डी और चरखा इत्यादि खरीदने पर 50% अथवा 75% किमत को वहन किया जाएगा ।
4. परियोजना द्वारा हथकरघा का प्रशिक्षण विशेषज्ञ द्वारा मौके पर या प्रशिक्षण संस्थानों में करवाया जाएगा।

जोखिम

1. समूह में आंतरिक झगडे होने पर समूह का कार्य प्रभावित हो सकता है।
2. मांग व पारदर्शता के अभाव में समूह टूटने की सम्भावना हो सकती है।
3. उत्पादों की मांग अधिकतर पर्यटकों के आगमन पर नोर्भर रहेगा I
4. हैंडलूम में स्थापित संस्थाओं से सपर्धा का सामना करना होगा

12. संभावित चुनौतियां तथा उनको कम करने के उपायों का विवरण

क0सं0	जोखिमों का विवरण	जोखिम कम करने के लिए उपाय
1	उत्पादों की स्थानीय बाज़ारों में मांग कम होने की सम्भावना हो सकती है I जिसका विक्री व् आय पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा I	शिमला, मंडी के बाज़ारों के दुकानदारों को विपणन के लिए जोड़ा जाएगा।
2	उत्पाद की गुणवत्ता घटने से विक्री कम हो सकती है I	गुणवत्ता बनाये रखने के लिए समूह को उच्च मापदंड और कौशल अर्जित करना होगा ।
3	स्थापित संस्थाओं से सपर्धा का सामना करना होगा I	गुणवत्ता व कार्य कौशल बनाये रखना होगा। विपणन की नयी संभावनाओं को तलाशते रहना होगा।

13. परियोजना की अर्थव्यवस्था का विवरण
पूंजीगत व्यय

क्रम सं	नाम	संख्या	दर	कुल लागत	% अंश	परियोजना का अंश	लाभार्थी का अंश	योग
1	खड्डी 50"	5	15000	75000	75/25	56250	18750	90000
2	चरखे स्टैंड सहित	2	1700	3400	75/25	2550	850	3400
3	बॉक्स	2	2000	4000	75/25	3000	1000	4000
	योग			**82400**		**61800**	**20600**	**82400**

14	गतिविधि की अर्थव्यवस्था का व्योरा						
	आवर्ती व्यय						
क्र०सं0	नाम	इकाई	मात्रा	दर	राशी	आपेक्षित उत्पादन	कुल राशी
1	**शॉल (80:20 धागा)**						
क	ताना बाना	kg.	21	800	16800	56 शॉल	
ख	केश्मीलोंन	kg.	1.7	500	850		
ग	वार्पिंग मजदूरी		56	25	1400		
घ	मजदूरी	दिहाड़ी	105	275	28875		

ड	पेकिंग,धुलाई अदि		56	25	1400		
					49325		**49325**
2	**स्टॉल (80:20 धागा)**						
क	ताना बाना	kg.	30	800	24000	100 स्टॉल	
ख	केश्मीलोंन	kg.	3	500	1500		
ग	मजदूरी	दिहाड़ी	75	275	20625		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		100	20	2000		
					48125		**48125**
3	**मफलर ऊनी**						
क	ताना बाना	kg.	13.5	1500	20250	135 मफलर	
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	45	275	12375		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		135	15	2025		
					34650		**34650**
							132100
2	स्थान का किराया, बिजली बिल आदि				1200		
3	किराया कच्चा माल व तैयार माल लाना ले जाना				1500		
4	अन्य खर्चे (रिपेयर्स स्टेशनरी आदि)				500		
					3200		**3200**
	योग आवर्ती लागत						**135300**
	आवर्ती व्यय (आवर्ती लागत–मजदूरी) 135300-61875						**73425**
	कुल व्यवसाय योजना लागत 82400 +73425						**155825**
4	**आय**						
	प्रत्यक्ष आय						
	शॉल		56	1170	65520		
	स्टॉल		100	601	60100		
	मफ़लर		135	302	40770		
	योग प्रत्यक्ष आय				166390		**166390**
	अप्रतयक्ष बचत या आय यदि कोई हो				14000		
	कुल अनुमानित आय				180390		**180390**

14	**अर्थव्यवस्था का सारांश**			
	उत्पादन की लागत			
1	कुल आवर्ती लागत	135300		
2	पूंजीगत व्यय पर 10% वार्षिक ह्रास	825		
3	बैंक ऋण पर 12% ब्याज वार्षिक	1503		
	योग	**137628**		**137628**

15	**वित्तीय सारांश**					
	विक्रय मूल्य की गणना प्रति वस्तु तथा कुल उत्पादन की विक्री से आय					

क्र०सं0	मद	अनुमानित उत्पादन संख्या	उत्पादन की लागत	लाभ प्रतिशत	लाभांश	कुल विक्रेय मूल्य (3+5)	बाज़ार विक्रय दर	कुल उत्पादन की विक्री से आय
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	शॉल	56	880	33	290	1170	1350	65520
2	स्टॉल	100	481	25	120	601	700	60100
3	मफ़लर	135	256	18	46	302	400	40770
	बिक्री से आय का योग							**166390**

16	**मूल्य–लाभ विश्लेषण (एक चक्र =1 महीना)**			
क्र०सं0	मद	राशी	कुल राशी	
	पूंजीगत व्यय पर 10% वार्षिक मूल्य ह्रास	825	**825**	
	आवर्ती लागत			
	कमरे का किराया, बिजली खर्चा अदि	1200		
	मजदूरी	61875		
	कच्चा माल	63400		
	अन्य खर्चे (रिपेयर, स्टेशनरी अदि)	500		
	परिवेहन खर्चे सामान कच्चा व तैयार	1500		
	पेकिंग, ड्राई क्लीनिंग आदि व्यय	6825		
	योग	135300	**135300**	
	कुल लाभ 166390-(825+135300)			30110
	उत्पाद विक्री से कुल लाभ (लाभ+मजदूरी+किराया) 30110+61875+1200			93185
	एक माह पश्चात् समूह में वितरण योग्य राशी (उत्पादों से आय– (ओसत मूलधन व ब्याज वापसी+दुसरे चक्र हेतु राशी+आवर्ती व्यय) =166390-(1973+500+73425)			90492
	उत्पादन आधा होने पर समूह में बाँटने योग्य राशी=उत्पाद विक्री का 50%-(मूलधन व ब्याज वापसी+दुसरे चक्र हेतु राशी+आवर्ती व्यय) =83195-(1973+500+73425)			7297

- समान रुची समूह में सभी सदस्य अत्यंत गरीब व अनुसूचित जाति से सम्बंधित है | समूह आवर्ती व्यय का 50% बैंक से ऋण के रूप में पहले माह लेने पर विचार करेगा तथा प्रथम माह में 50% उत्पादन करेंगे | इसके बाद दुसरे माह में उत्पाद के विक्रय होने पर 100% आवर्ती खर्चा तथा उत्पादन करेंगे | आवर्ती खर्चे से उत्पादन के विक्रय से वह लाभ प्राप्त करेंगे |
- 50% उत्पादन व विक्री करने पर लाभ व मजदूरी के साथ 73425 रुपए को नहीं बाटेंगे तथा इस से अगले चक्र के लिए आवर्ती व्यय को बचा कर रखेंगे |
- पूंजीगत व्यय का 25% समूह के सदस्य नकद के रूप में देंगे तथा 75% परियोजना द्वारा वहन किया जायेगा |

- बैंक ऋण की दर में से 5% ब्याज परियोजना द्वारा सीधे बैंक के खाते में जमा किया जाएगा | शेष ब्याज समूह द्वारा अदा किया जाएगा।

17	धनराशी की आवश्यकता			
क	समूह की पहले माह की आवश्यकता			
क्र०सं0	मद	राशी		
1	पूंजीगत व्यय	82400		
2	आवर्ती व्यय का 50%	36713		
	योग	119113		
	अथवा	120000		

ख	समूह के वित्तीय साधन	
क्र०सं0	वित्तीय प्रबंध का विवरण	राशी
1	परियोजना द्वारा पूंजीगत व्यय का अनुदान (75%)	61800
2	समूह के सदस्यों का नकद योगदान (25%)	20600
3	समूह की वचत	14000
	योग	96400
4	कुल ऋण की आवश्यकता 120000-96400	**22800**

**बैंक से ऋण लेने के लिए परियोजना द्वारा 1,00,000 परिक्रिमी निधि प्रदान की जायेगी तथा इसके इलावा आवर्ती व्यय के लिए 22800 रुपए बैंक से ऋण लेने की आवश्यकता पड़ सकती है।*

18. सम विच्छेदन बिन्दू (ब्रेक इविन प्वाइन्ट) की गणनाः

ब्रेक इवन पॉइंट = 290 + 120 + 46 [लाभ (एक शॉल + एक स्टॉल + एक मफलर)] = 456

अत: ब्रेक इवन पॉइंट = 97400/456 = 214 दिन अथवा 7 माह

प्रत्येक शॉल , स्टॉल और मफलर के लाभ की गणना पर सम विच्छेदन बिन्दू 214 दिनों अथवा सात माह में उपरोक्त अनुपात में विक्रय करने पर प्राप्त किया जा सकता है।

19. बैंक से ऋण वापसी का किश्तवार नियोजन

क0	माह	ऋण वापसी	संचय	अवशेष ऋण

स0		मूल धन	कुल ब्याज	परियोजना द्वारा 5 % ब्याज देय	समूह द्वारा शेष ब्याज 7% देय	समूह द्वारा प्रति माह देय किश्त	कुल मूलधन वापसी	ऋण वापसी	मुलधन	12 प्रतिशत ब्याज	कुल
1	मा 1								22800	228	23028
2	मा 2	1805	228	95	133	2033	1900	2500	20995	210	21205
3	मा 3	1813	210	87	122	2022	1900	5000	19182	192	19374
4	मा 4	1820	192	80	112	2012	1900	7500	17362	174	17536
5	मा 5	1828	174	72	101	2001	1900	10000	15535	155	15690
6	मा 6	1835	155	65	91	1991	1900	12500	13699	137	13836
7	मा 7	1843	137	57	80	1980	1900	15000	11857	119	11975
8	मा 8	1851	119	49	69	1969	1900	17500	10006	100	10106
9	मा 9	1858	100	42	58	1958	1900	20000	8148	81	8229
10	मा 10	1866	81	34	48	1948	1900	22500	6282	63	6344
11	मा 11	1874	63	26	37	1937	1900	25000	4408	44	4452
12	मा 12	1882	44	18	26	1926	1900	4354	0	0	0
13	मा 13	2526	0	0	0	1900	1900	0	0	0	0
	योग	22800	**1503**	**626**	**877**	**23677**	**22800**	**0**	**0**	**1503**	**0**

- 12% वार्षिक ब्याज की गणना प्रतिमाह घटते हुए मूलधन के आधार पर की गई है।
- समायोजन के कारण अंतिम ई.एम.आई. नियमित ई.एम.आई. से कम हो सकती है।
- टर्म लोन के अतिरिक्त और भी अन्य विकल्पों सी०सी०एल० आदि पर आवश्यकता पड़ने पर निर्णय लिया जाएगा जिसमें भी समूह को कम से कम ब्याज का भुगतान करना पड़े ।

- समूह द्वारा दुसरे माह में कुल उत्पादन का शॉल, स्टॉल और मफलर तैयार किये जायेंगे तथा इनके विक्रय करने पर समूह को मजदूरी के रूप में 74250 रूपए तथा लाभांश से 30110 रूपए मिलेंगे। इस प्रकार प्रत्येक सदस्य को 4950 रुपए मजदूरी के रूप में तथा 2007 रुपए लाभांश के रूप में अतिरिक्त आय होगी। परन्तु प्रथम माह में समूह के सदस्य 50% उत्पादन व आवर्ती व्यय करेंगे। अत: लाभांश व मजदूरी को दुसरे चक्र के लिए बचत करके खर्च

समान रुची समूह के नियम

1. समूह का काम : हथकरघा बुनाई (शॉल, स्टॉल और मफलर)
2. समूह का पता : गाँव न्यूल, डाकघर न्यूल , तहसील और जिला कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।
3. समूह के कुल सदस्य : 15 (सभी अनूसूचित जाति से)
4. समूह की पहली बैठक की तिथि ; 12.03.2020.
5. समूह में हर 100 रूपए पर 2 रूपए ब्याज होगा।
6. समूह की मासिक बैठक हर माह की 5 तिथि को होगी।
7. समूह के सभी सदस्य हर माह की बचत की गई राशि को समूह में जमा करेगें।
8. स्वंय सहायता समूह की बैठक में सभी सदस्य को शामिल होना पड़ेगा।
9. स्वंय सहायता समूह का खाता कांगड़ा सेंट्रल को-ओपेरेटिब बैंक, बजोरा में खोला है खाता संख्या नंबर 50073092177 है।
10. समूह की बैठक में गेर हाज़िर रहने के लिए प्रधान व सचिव को उचित कार्य बता कर अनुमति लेनी होगी।
11. समूह में जो बचत की राशी जमा नहीं करवाते या 3 बेठकों तक समूह से गेर हाज़िर रहते है तो उस महिला को समूह से निकाल दिया जाऐगा।
12. समूह में जो व्यक्ति कारण बताए वगेर गेर हाज़िर रहता है तो अगली बैठक उस व्यक्ति के घर में होगी जिसका खर्च उस व्यक्ति को खुद करना होगा अगर दो सदस्य होगें तो खर्च मिल कर देना होगा।
13. भविष्य में स्वंय सहायता समूह के प्रधान व सचिव सर्व सहमति से चुने जाऐगें।
14. प्रधान व सचिव बैंक से लेन देन कर सकते है यह पद एक वर्ष तक मान्य होगा।
15. प्रधान, सचिव या सदस्य समूह के विरूद्ध कोई काम नही करेगा समूह की रकम का सदा सदुपयोग करेगें।
16. अगर सदस्य किसी कारणवश समूह को छोड़ना चाहता है अगर इस व्यक्ति ने ऋण लिया है तो समूह को वापिस करना होगा तभी समूह को छोड़ समता है अन्यथा नही
17. ऋण का उदेश्य रकम की चुकोती का समय ऋण की किश्त और ब्याज की दर बैठक में तय की जाएगी।
18. आपातकालीन स्थिति के लिए प्रधान व सचिव के पास कम से कम 1000 रूपये की राशी होनी चाहिए।
19. स्वंय सहायता समूह के रजिस्टर को सभी सदस्यों के सामने पढ़ा व लिखा जाना चाहिए।
20. बड़ें ऋण लेने वालों को एक सप्ताह पहले की सूचना देनी होगी।
21. ऋण जरूरत के समय सभी सदस्यों को मिलना चाहिए।
22. अगर सदस्य बिना कारण से समूह को छोड़ना चाहता है तो उस सदस्य की जमा राशी समूह में बांटी जाएगी।
23. समूह को अपनी मासिक रिपोर्ट प्रति माह तकनीकी क्षेत्रीय इकाई (Field Technical Unit) के कार्यालय में देनी होगी।

समूह का सहमती पत्र व आवश्यक संतुतियाँ एवं स्वीकृति

आज दिनाकं ०५-१२-२०१९ को नाग रानी स्वयं सहायता समूह की बैठक हुई। बैठक में प्रधान श्रीमती ममता कुमारी की अध्यक्षता में हुई जिसमे समूह के सदस्यों ने सर्व सहमती से निर्णय लिया कि आय बढाने के लिए शॉल, स्टॉल और मफलर बुनाई का कार्य करने के लिए **हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तन्त्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना** (जाईका वित्तपोषित) से जुड़ने की सहमती प्रदान करते है तथा उपरोक्त परियोजना की सहायता से सभी सदस्यों द्वारा चयनित की गई गतिविधि जो कि हथकरघा बुनाई है, को इसकी व्यवसाय योजना के अनुसार या बाज़ार की मांग के अनुसार सभी सदस्य मिलजुल कर सफल बनायेंगे।

समूह के सचिव के हस्ताक्षर

समूह के प्रधान के हस्ताक्षर

हस्ताक्षर
प्रधान,
जैव विविधता उपसमिति
....

फील्ड तकनीकी यूनिट (FTU)
कुल्लू

स्वीकृत

कुल्लू मंडलीय प्रबंधन इकाई (DMU)
वन्यप्राणी मंडल, कुल्लू

Divisional Management Unit (DMU) Officer
-cum Divisional Forest Officer,
Wild Life Division, Kullu

स्वयं सहायता समूह नाग रानी (न्यूल उप समिति) सदस्यों के फोटोग्राफ